>

Title: Need to have a Legislative Council in NCT, Delhi and in the States where it does not exist.

श्री जय प्रकाश अग्रवाल (उत्तर पूर्व दिल्ली): सर, एक महत्वपूर्ण विषय है कि देश में बहुत सारी ऐसी भाषाएं, बोलियां और लिपियां हैं जो अब लुप्त होती जा रही हैं। हिंदुस्तान में हर 50 किलोमीटर पर भाषा बदल जाती है और बहुत सारी ऐसी भाषाएं हैं जो आज किसी रिकार्ड में नहीं हैं और न ही सरकार का ऐसा कोई विभाग है जो उसका ध्यान रखता है। साथ ही देश में बहुत सारी ऐसी लिपियां भी हैं जो केवल बोली जाती हैं, लिखी नहीं जाती हैं और उनका भी हिंदुस्तान के किसी विभाग के पास कोई रिकार्ड नहीं है। मैं उनमें से एक का जिक्र करना चाहता हूं। हमारे जो पुराने बही-खाते लिखे जाते थे जो अब कैश-बुक और लेजर में तबदील हो गये हैं। उन बही-खातों में जो भाषा लिखी जाती थी वह मुंडी लिखी जाती थी, बोली नहीं जाती थी। आज वह लुप्त होती जा रही है, लोग उसे लिखना भूल गये, उसके लिखने वाले नहीं रहे, बही-खाते बदल गये। मेरी सरकार से मांग है कि कोई न कोई ऐसा डिपार्टमेंट बनना चाहिए जिसमें इस प्रकार की पुरानी भाषाएं संजोकर रखी जा सकें, जिससे आने वाली पीढ़ी को इस बारे में मालूम हो सके।

प्रो. रामशंकर (आगरा): सभापति जी, मैं श्री जयप्रकाश अग्रवाल जी द्वारा उठाये गये विषय से अपने के सम्बद्ध करता हूं।